इकाई 13 फील्ड वर्क करना

इकाई की रूपरेखा

13.0 प्रस्तावना

13.1 मानवविज्ञान क्षेत्र में फील्ड से क्या तात्पर्य है

13.2 फील्डवर्क हेतु तैयारी

- 13.2.1 अनुसंधान प्रकल्प तैयार करना
- 13.2.2 साहित्य की समीक्षा

13.3 फील्डवर्क के मूलतत्व

- 13.3.1 घनिष्ठता स्थापित करना
- 13.3.2 तथ्य संग्रहण
- 13.3.3 फील्ड डायरी बनाना
- 13.3.4 फील्ड गैजेट्स

13.4 फील्ड वर्क के उपरांत क्या किया जाए

- 13.4.1 तथ्य संकलन और विश्लेषण
- 13.4.2 रिपोर्ट लेखन

13.5 सारांश

13.6 संदर्भ

13.7 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत शिक्षार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगे:

- मानव विज्ञान के क्षेत्र में फील्ड वर्क कैसे किया जाता है;
- फील्ड वर्क शुरू करने से पहले की जाने वाली तैयारियां;
- फील्ड वर्क करते समय ध्यान रखने वाली बातें; तथा
- फील्ड वर्क के उपरांत डेटा संकलन, डेटा विश्लेषण तथा रिपोर्ट लेखन का महत्व

13.0 प्रस्तावना

फील्डवर्क, मानववैज्ञानिक अध्ययन का एक अभिन्न अंग है। इससे पूर्व की इकाई में हमने आपको मानव विज्ञान के क्षेत्र में फील्डवर्क परंपरा की उत्पत्ति के साथ–साथ फील्डवर्क का इतिहास को बताने की कोशिश की और आपको उन प्रारंभिक मानव

योगदानकर्त्ता : डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

वैज्ञानिकों से परिचित कराया जिन्होंने अनुभवजन्य फील्डवर्क का संचालन किया। आज के युग में फील्डवर्क मानववैज्ञानिक अध्ययन की विरासत बन चुका है। अब तक आप यही सोच रहे होंगे कि फील्डवर्क कैसे किया जाए? क्या कोई किसी गांव, किसी विद्यालय अथवा आदिवासी समाज जैसी जगहों पर जा सकता है और फील्डवर्क कर सकता है? खैर, इन सब बातों का कोई उत्तर नहीं है किसी को भी फील्डवर्क शुरू करने से पहले विस्तृत तैयारी की जरूरत होती है अतः इस इकाई में हम आपको फील्डवर्क करने के तरीकों और तैयारियों के बारे में जानकारी देंगे। यह इकाई आपको फील्डवर्क से संबंधित आवश्यकताओं को समझने में सहायक होगी जो फील्डवर्क शुरू करने से पहले जरूरी होते हैं और इसमें आपको यह भी बताया जाएगा कि फील्ड से लौटने के बाद संकलित डेटा को किस प्रकार विश्लेषण किया जाता है तथा रिपोर्ट लेखन कैसे किया जाता है। फील्ड पर जाने के लिए आवश्यक तैयारी जैसे शोध डिजाइन तैयार करने, शोध समस्या की पहचान करने, शोध प्रश्नों को समझने के लिए साहित्य समीक्षा करने, क्षेत्र में घनिष्ठता (रैपो) बनाने, डाटा संग्रहण में उपयोग की जाने वाली विधियां, क्षेत्र डायरी को बनाने जैसी मूलभूत आवश्यकता के बारे में अवगत कराया गया है। अग्रिम अनुभागों में फील्ड से लौटने के उपरांत शोधार्थी को फील्ड में से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने और अंत में रिपोर्ट लेखन या शोध लेखन तथा रिपोर्ट लेखन प्रोजेक्ट कार्य प्रस्तुत करने आदि के बारे में इस इकाई में बताया जाएगा उचित मार्गदर्शन देने के लिए इस इकाई को तीन भागों में बांटा गया है खासतौर से फील्ड वर्क के पहले और बाद में जो भी गतिविधियां करनी है उनसे संबंधित यह भाग हैं।

13.1 मानवविज्ञान क्षेत्र में फील्ड से क्या तात्पर्य है?

फील्डवर्क के बारें में प्रारंभ करने से पहले हमें मानव वैज्ञानिक उच्चारण में 'फील्ड' शब्द के अर्थ को समझना चाहिए। जैसा कि पूर्व की इकाईयों में चर्चा की जा चुकी है कि मानवविज्ञान संबंधी अन्वे ाण अथवा मानव विज्ञान फील्डवर्क के संस्थापक सदस्यों यानी जनकों जैसे हेडन, रेडक्लिफ–ब्राउन, रिवर्स, बोआस और मालिनोव्स्की के समय से ही लोकप्रिय रहा है। इस विधा में लंबे समय तक कहीं दूर जाना होता है और "स्थायी निवासियों" के साथ रहना होता है, "बाहरी" लोगों के साथ रहना भी इसमें शामिल हैं। मालिनोव्स्की ने अपनी किताब *अर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक* में वर्णन किया है कि "स्वंय को अन्य लोगों के साथ 'व्हॉइट' लोगों की संगत से भी खुद को दूर करना होगा और जहां तक संभव हो मूल निवासियों के साथ निकट संपर्क में रहना होगा जो वास्तव में केवल गांवों में रहकर ही किया जा सकता है।" (मालिनोव्स्की, 1922:6) इन अध्ययनों ने 'अन्य' लोगों के जीवन और संस्कृति को गहराई से समझने पर अपना ध्यान केंद्रित किया जो कि संभवत 'व्हॉइट' लोग नहीं थे। क्योंकि प्रारंभिक फील्ड वर्क आमतौर पर औपनिवेशिक युग के दौरान किए गए थे, इसलिए दूसरों का तात्पर्य उन सभी समाजशास्त्रियों से है जो मानव विज्ञानी थे और जो गैर–पश्चिमी और अक्सर उपनिवेश इस स्थान के थे। हालांकि, वर्तमान समय में "दूसरे " लोग "स्वयं" के रूप में बदल गए हैं और मानवविज्ञानी अब अपने समाज में अक्सर अपने जीवन अनुभव के बारे में ही लिख रहे हैं। मानव विज्ञानी अब कोई बाहरी व्यक्ति ना होकर समाज में रहने वाला ही व्यक्ति है जो अंदरूनी सूत्र के दृष्टिकोण से अपनी कहानी को निर्मित कर रहा है। स्थानीय मानव वैज्ञानिकों द्वारा अपने समाज से संबंधित शोध करने की जरूरत अधिकतर औपनिवेशिक लेखन का सामना करने और अपने खुद के आंतरिक विचार से संबंधित कहानियों को प्रस्तुत करने के लिए महसूस की गई है। यहां तक कि दूसरे समाजों का अध्ययन करते समय सूचना देने वाले अथवा अध्ययन किए जा रहे लोगों को कथानकों के

रूप में सबसे अधिक सम्मिलित किया जाता है। इसके कारण वर्तमान समय में फील्ड की अवधारणा और विचार में अत्यधिक बदलाव हुआ है। 21वीं सदी में मानवविज्ञान के क्षेत्र में फील्ड कोई संगठन अथवा संस्था या ग्रामीण या शहरी स्थान या आभासी दुनिया नहीं है अपितु वह अपने लोग अपना गांव और परिवार भी हो सकता है। कोई मानवविज्ञानी एक से अधिक स्थानों पर कार्य कर सकता है जिसे सामान्यतः बहुपक्षीय फील्डवर्क के रूप में जाना जाता है। स्वयं के बारे में शोध करने की इस वर्तमान प्रवृत्ति को ऑटो–एथनोग्राफी के रूप में जाना जाता है। अतः मानव वैज्ञानिक संदर्भ में फील्ड कोई भी वह स्थान हो सकता है जो मानव गतिविधियों से जुड़ा हो और वह कहीं भी अवस्थित हो सकता है।

13.2 फील्डवर्क की तैयारी

अब हम इस बात की चर्चा करेंगे की कोई किस प्रकार फील्ड वर्क की तैयारी करता है। कोई यूं ही किसी स्थान का चयन नहीं कर सकता है, न ही फील्डवर्क करने के लिए किसी स्थान पर जा सकता है। अपितु, फील्डवर्क करने के लिए सर्वप्रथम योजना निर्मित की जाती है और इस फील्डवर्क की योजना में कई चरण और स्थल शामिल होते हैं। इसके लिए सबसे पहले फील्वर्क करने की प्रासंगिकता का आकलन करना होता है। किसी शोधकर्ता को मूल प्रश्नों के उत्तर पहले खोजने होते हैं कि फील्ड अध्ययन क्यों किया जाए ,फील्ड अध्ययन कहां पर किया जाए और फील्ड अध्ययन कैसे किया जाए। इस खंड में इन सब बातों की चर्चा की गई है कि एक अनुसंधानकर्ता फील्डवर्क के लिए क्या–क्या तैयारियां करें। फील्डवर्क से संबंधित विभिन्न चरणों की यहां विस्तृत चर्चा की जाएगी।

13.2.1 अनुसंधान प्रकल्प तैयार करना

सर्वप्रथम यह जरूरी है कि हमें फील्डवर्क करने के प्रत्येक चरण की एक विस्तृत योजना और समझ होनी चाहिए। अतः प्रारंभिक चरण यह है कि अनुसंधान किस प्रकार किया जाना है उसके लिए एक शोध–प्रकल्प था अनुसंधान डिजाइन को तैयार किया जाए जो कि कदम दर कदम हमारा मार्गदर्शन करें। शोध प्रकल्प, वह ढांचा होता है जो हमें इस बारे में बताता है कि शोध किस प्रकार किया जा रहा है। अनुसंधान डिजाइन में अनुसंधान के मूल उद्देश्य शामिल होते हैं जैसेकि अनुसंधान कैसे किया जाएगा और यह अनुसंधान किस स्थान पर किया जाएगा तथा अनुसंधान में कौन सी तकनीकों और उपकरणों तथा विधियों का प्रयोग किया जाएगा। फील्ड से एकत्र किए गए आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण किस प्रकार किया जाएगा। आइए एक ग्राफ के माध्यम से हम अनुसंधान डिजाइन तैयार करने में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न चरणों को समझने का प्रयास करते हैं।

इस आरेख को देखकर यह स्पष्ट होता है कि फील्ड वर्क के लिए प्रथम और महत्वपूर्ण आवश्यकता शोध प्रश्न का होना है। फील्ड वर्क शुरू करने से पहले शोधकर्ता को पहले किसी समस्या की पहचान करने की जरूरत होती है जिसके आधार पर अनुसंधानकर्ता किसी परिकल्पना को निर्मित कर सकता है। कोई प्रकल्पना उन चरों के मध्य एक स्थाई संबंध होता है जिसे हम फील्ड के रूप में देखते हैं। हालांकि, गुणात्मक अनुसंधान के लिए परिकल्पना का सूत्रीकरण आवश्यक मानदंड नहीं है। क्योंकि, यह एक खोज पूर्ण शोध हो सकता है। कोई परिकल्पना तैयार करने से पहले यह यह आवश्यक है कि अनुसंधान के अभिप्राय और उद्देश्यों का वर्णन किया जाए। इस प्रकार यह अनुसंधान क्यों जरूरी है और इसका भी वर्णन किया जा सकता है। मानव वैज्ञानिक अनुसंधान के रूप में इसे किस प्रकार उचित बताया जा सकता है।

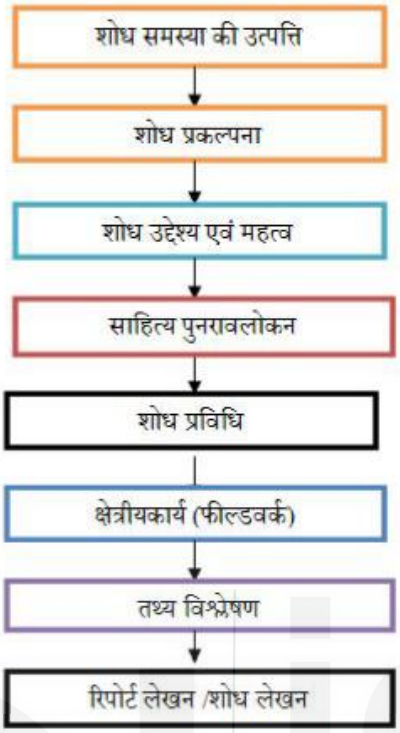

किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए यह जरूरी है कि उसे उस यूनिवर्स(भौतिक ब्रहमांड) अथवा लोगों की पहचान करनी चाहिए जिनके बारे में अनुसंधान किया जाना है। यूनिवर्स, कोई वास्तविक भौतिक क्षेत्र हो सकता है। उदाहरण के लिए, कोई गांव या शहरी क्षेत्र अथवा फुटबॉल खिलाड़ियों की जनसंख्या भी हो सकती है। अनुसंधान एक साथ कई स्थानों पर किए जा सकते हैं जैसे, कोई अपनी यात्रा के दौरान प्रवासियों के बारे में शोध कर सकता है। यूनिवर्स का चयन प्रत्यक्ष रूप से और तार्किक रूप से समस्या की प्रकृति से संबंधित है। वास्तव में यूनिवर्स व क्षेत्र है जिसे हम उस समय संदर्भित करते हैं जब हम फील्डवर्क शब्द का उपयोग करते हैं ।

इसके उपरांत मौजूदा साहित्य की समीक्षा को साहित्य समीक्षा के नाम से जाना जाता है। साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को उस प्रकार के कार्य को समझने में सहायता करती है जो पहले से ही उस विषय के बारे में किए गए हैं। साहित्य समीक्षा से अनुसंधानकर्ताओं को उन कमियों की जानकारी मिलती है जिससे अनुसंधानकर्ताओं को अधिक सार्थक शोध करने में सहायता मिलती है। विषय के बारे में मौजूदा साहित्य को एकत्रित करने के उपरांत अगला चरण अनुसंधान पद्धति को निर्मित करना है, जिसमें अनुसंधानकर्ता किस प्रकार अनुसंधान कार्य को अंजाम देगा। अनुसंधान प्रविधि का निर्माण हमें यह जानकारी देता है कि फील्डवर्क किस प्रकार किया जाएगा और किस प्रकार तथ्य संग्रहण(डेटा) किया जाएगा। डेटा का संग्रहण और विश्लेषण अनुसंधान डिजाइन का अगला चरण है जो अंततः रिपोर्ट लेखन की ओर जाता है। अनुसंधान डिजाइन को किस प्रकार बनाया जाए और क्षेत्र यानि फील्ड में इसे किस प्रकार निष्पादित किया जाए इसके बारे में आगे के अनुभवों में चर्चा की जाएगी। इस अनुभाग में किसी अनुसंधान समस्या की पहचान करने और साहित्य की समीक्षा करने के बारे में चर्चा की जा रही है क्योंकि, इन चरणों को फील्डवर्क पर जाने से पहले पूरा करना की आवश्यकता होता है।

13.2.1.1 शोध समस्या की पहचान करना

फील्डवर्क करने के लिए पहली शर्त यह है कि किसी शोध समस्या या प्रश्न की पहचान की जाए। कोई शोध प्रश्न क्या है और हम शोध प्रश्न की पहचान किस प्रकार करते हैं, ऐसे कौन से मानदंड या मानक हैं जिन पर शोध प्रश्न बनाते समय ध्यान देने की जरूरत होती है, इन सब बातों की चर्चा इस अनुभाग में की जाएगी। शोध प्रश्न, किसी भी विषय से संबंधित हो सकते हैं जो कि प्रासंगिक हो, उचित हो और मनुष्य से संबंधित हो। उदाहरण के लिए दैनिक मजदूरों के बड़े शहरों में प्रवास के पैटर्न को शोध प्रश्न के रूप में लिया जा सकता है। शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के प्रत्येक बिंदु को परिभाषित करना चाहिए और उसकी अवधारणा को स्पष्ट करना चाहिए। उदाहरण के लिए, पहले हमें दैनिक मजदूरों की अवधारणा को परिभाषित करना चाहिए। वे किस प्रकार के कार्य करते हैं , उनकी आजीविका की प्रवृत्ति कैसी है , और यह भी कि प्रभाव से क्या तात्पर्य है, इन सभी बातों का विस्तृत वर्णन किया जाना चाहिए। शोधकर्ता ने जिस साहित्य का अध्ययन किया है वह भी इस संबंध में सहायक सिद्ध होगा। शोध प्रश्न के अंतर्गत हमें सबसे पहले यह समझने की जरूरत है कि हम प्रवास पैटर्न का अध्ययन क्यों करना चाहते हैं तथा हम प्रवास पैटर्न शब्द का उपयोग क्यों कर रहे हैं। जैसा कि, हम सभी जानते हैं कि प्रवासन एक घटना है, अनादि काल से प्रवसन होता आया है। लोग नई जगह पर भोजन और काम की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे हैं। हालांकि, जब हम प्रवास पैटर्न कहते है तब हम मूल रूप से प्रवास प्रथा को देख–सुन रहे होते हैं, जैसे कि मौसमी प्रवास आदि। किसी शोध समस्या की पहचान किए जाने के उपरांत अनुसंधानकर्ता के लिए अगला चरण इस क्षेत्र में विद्वानों द्वारा पहले से किए गए शोध कार्यों को देखना और समझना है। शोध समस्या की पहचान अनुसंधानकर्ता की हितों के साथ गहन रूप से जुड़ी हुई है भले ही वह खोजपूर्ण अनुसंधान हो अथवा क्रियात्मक अनुसंधान या विशुद्ध रूप से विश्लेषणात्मक सैद्धांतिक अनुसंधान हो।

13.2.2 साहित्य की समीक्षा

जब हम अपने अध्ययन के लिए किसी शोध समस्या का चयन अथवा पहचान कर लेते हैं तब हमें एक पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है कि, संबंधित क्षेत्र में कौन–कौन से दूसरे शोध किए गए हैं जिसे हम साहित्य समीक्षा के रूप में जानते हैं। साहित्य की समीक्षा यह समझने में सहायता करती है कि दूसरे शोधकर्ताओं द्वारा शोध समस्या को किस प्रकार से देखा, समझा गया है और इसमें क्या कमियां रह गई हैं। यह मूल रूप से हमारे शोध कार्य को मजबूती प्रदान करता है और पुनरावृतियों को दूर करने में हमारी सहायता करता है। उदाहरण के लिए यदि, हम फेसबुक और वर्चुअल फ्रेंड्स जैसे विषय को लेते हैं और इस प्रोजेक्ट पर कार्य करना शुरू करते हैं तब उसी विषय पर साहित्य के बारे में खोज किए बिना हम किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा किए गए अनुसंधान की नकल कर सकते हैं, जो किसी पहिए को पुनः घुमाने जैसा ही होगा। इसलिए साहित्य समीक्षा उस कार्य को रेखांकित करती है जो पहले से किया जा चुका है तथा जिससे दूसरे अध्ययनों की कमियों के आधार पर शोध प्रश्न तैयार करने में सहायता मिलती है।

जैसा कि वर्तमान संसार में किसी भी वस्तु और व्यक्ति के बारे में पता लगाया जा सकता है और ऐसी स्थिति में अनुसंधानकर्ता के लिए यह चुनौती है कि वह कमियों को खोजें और उन क्षेत्रों का पता लगाएं कि जिन पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है, जिन्हें एक अलग दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण की पहचान करने में भी इससे हमें सहायता

मिलती है जिसका उपयोग हम आगे कर सकते हैं। यह अवधारणाओं को परिभाषित करने एवं समझने में भी हमारे लिए मार्गदर्शक की भूमिका अदा कर सकते हैं।

अधिकांश समय साहित्य की समीक्षा नैतिक स्तरों पर की गई है जिसे गुणात्मक शोध करते समय इसे अनुचित बताया गया है। ऐसा तर्क फील्ड के बारे में पूर्व विचार रखने में जन्मा था। यदि कोई व्यक्ति, फील्ड वर्क प्रारंभ करने से पहले साहित्य की समीक्षा करता है तो फील्ड के प्रति शोधकर्ता के विचार पूर्वाग्रही हो सकते है। हालांकि, वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों के दौरान शोधकर्ता द्वारा इसे समय, ऊर्जा और धन खर्च करने के संबंध में नकार दिया ,क्योंकि इससे पहले से मौजूद डेटा और जानकारी की प्रतिकृति और दोहराव होने की संभावना होती है। किसी अनुसंधानकर्ता को उस स्तर पर कार्य शुरु करना चाहिए जिसके बारे में दूसरे अनुसंधानकर्ताओं द्वारा शोध नहीं किया गया है। इसलिए साहित्य की समीक्षा हेतु पिछले शोध कार्य के बारे में ज्ञान अर्जित करना आवश्यक है। साहित्य समीक्षा भी अपने आप में एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए अनुसंधानकर्ता को उन सभी कार्यों के बारे में जानकारी होनी ही चाहिए जो फील्डवर्क की अवधि के दौरान भी किए जा रहे हैं। इसमें दूसरे विषयों के साहित्य को भी सम्मिलित करने की जरूरत होती है जिससे अनुसंधानकर्ता यह समझ सकाता है कि उक्त विषय को अन्य विषयों में किस प्रकार देखा और समझा जाता है। जैसे कि कोई अर्थशास्त्री अथवा सामाजिक कार्यकर्ता प्रवासन को किस दृष्टिकोण से देखेगा। फील्डवर्क पूरा करने के बाद भी साहित्य समीक्षा की आवश्यकता होती है क्योंकि, उस अवधि के दौरान कई नए शोध कार्य प्रकाशित हो चुके होते हैं। इसलिए हरदम यह सलाह दी जाती है कि प्रचलन में नवीनतम ज्ञान की जानकारी रखना चाहिए और किसी के अनुसंधान कार्य से जितना और जहां तक संभव हो उतना अपने शोध में शामिल करना चाहिए और साथ ही किसी प्रकार के दोहराव और नकल से भी बचना चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. फील्ड वर्क से आपका क्या तात्पर्य है?

   .....

   .....

   .....

2. मानवविज्ञान में फील्ड का क्या अर्थ है

   .....

   .....

   .....

3. ऐसी कुछ स्थानों को सूचीबद्ध करें जहां पर मानववैज्ञानिक फील्डवर्क कर सकते हैं।

   .....

   .....

   .....

   .....

4. "मानव वैज्ञानिक साहित्य की समीक्षा नहीं करते हैं " यह कथन सही है अथवा गलत, इसका उल्लेख करें।

.....

.....

.....

13.3 फील्डवर्क के मूलतत्व

जब शोध समस्या की पहचान कर ली जाती है तब साहित्य समीक्षा से प्राप्त की गई कमियों का विश्लेषण कर अध्ययन के लिए अभिप्राय और उद्देश्य निर्मित किए जाते है। मानववैज्ञानिक सिद्धांत की प्रकृति और अनुशासन के लक्ष्यों के लिए यह जरूरी है कि शोधार्थी, क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) करें। मानव विज्ञानी किसी क्षेत्र में क्या करते हैं? अनुसंधान डिजाइन द्वारा निर्मित समस्या के अभिप्राय और उद्देश्य से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण मानव विज्ञानियों द्वारा किया जाता हैं। आइए इस अनुभाग में हम इस बात को जानेंगे कि कोई मानव विज्ञानी किसी फील्ड में किस प्रकार पहुंचता है और अध्ययन के अंतर्गत लोगों के साथ घनिष्ठतापूर्वक रहते हुए जानकारी को किस प्रकार एकत्रित करता है।

13.3.1 घनिष्ठता (रेपो) स्थापित करना

रैपोर्टर एक प्राचीन फ्रांसीसी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ 'वापस लाना' होता है। (Webster-com) फील्ड वर्क में घनिष्ठता स्थापित करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानव विज्ञानी किसी समुदाय अथवा यूनिवर्स तक पहुंचते हैं और सूचना और आंकड़ों को एकत्रित करने में सक्षम हो पाते हैं। घनिष्ठता का उद्देश्य लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंध को स्थापित करना है। घनिष्ठता स्थापित करने से दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों के बीच भरोसे, मान्यता और विश्वास के सृजन में सहायता मिलती है जो दोनों के लिए सूचना के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाता है। तब यहां यह सवाल उठता है कि घनिष्ठता स्थापित किस प्रकार की जाए।

आइए एक उदाहरण को देखते हैं, आप यह माने कि आप किसी सड़क पर चल रहे हैं और कोई व्यक्ति वहां आकर अचानक आपसे आपका नाम और उम्र आदि पूछने लगता है। वह अचानक आपसे यह कहने लगता है कि जरा अपना हाथ तो बढ़ाइए मुझे आपकी उंगली में सुई चूभोकर आपके खून का सैंपल एकत्रित करना है। ऐसी स्थिति में आप क्या महसूस करेंगे? क्या आप उस व्यक्ति के प्रश्नों का उत्तर देंगे या उस व्यक्ति को अपने हाथ से अपने खून का सैंपल एकत्रित करने की अनुमति देंगे? ऐसी स्थिति में आप को खतरा महसूस होगा और आप असहज भी महसूस करेंगे।

दूसरे मामले में यदि वही व्यक्ति पहले अपना परिचय देता है और खून के सैंपल को एकत्र करने के पीछे अपने उद्देश्य को आपसे साझा करता है। और आपकी इस बारे में सहमती लेता है कि आप खून का सैंपल देंगे या नहीं या उसके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए क्या कुछ समय निकालेंगे या नहीं तब, आपको अधिक सुविधा महसूस होगी और आप उसके प्रश्नों का उत्तर बिना किसी भय अथवा असुविधापूर्वक देने के स्थान पर निडर होकर सुविधाजनक ढंग से दे सकते हैं। जब हम फील्ड में होते हैं तब हमपर भी यही बातें लागू होती हैं। हम फील्ड में जाकर धड़ाधड़ अपने सवालों को लोगों से नहीं पूछ सकते। इसके लिए जरूरी है कि हम उन

लोगों को पहले अपना परिचय दें और अपने वहां आने का उद्देश्य बताएं और सबसे जरूरी यह है कि हम लोगों से घनिष्ठता बढ़ाएं। जैसे ही हम उनकी अनुमति ले लेते है और उनका भरोसा जीत लेते हैं तब हम अपना फील्डवर्क शुरू कर सकते हैं। घनिष्ठता स्थापित करने की यही प्रक्रिया है जहाँ हम अपने सूचनादाताओं के साथ समय बिताते हैं और उन्हें यह मौका देते हैं कि वे हमारे कार्यों को समझ सकें। घनिष्ठता स्थापन द्विपक्षीय प्रक्रिया है ,जहाँ पर फील्डवर्कर का भी प्रेक्षण किया जाता है और फील्ड के लोगों द्वारा उससे भी सवाल किए जाते हैं। यह वह समय होता है जब अनुसंधानकर्ता लोगों के रीति–रिवाजों, आदतों और जीवनशैली के बारे में सीखता है ताकि वह लोगों के साथ स्वत्रंत्र रूप से इधर उधर घूम सकें। घनिष्ठता स्थापन की अवधि में बहुत से मानवविज्ञानी स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हैं। घनिष्ठता स्थापन एक सतत प्रक्रिया है तथा फील्डवर्क की पूरी अवधि के दौरान शोधकर्ता के लिए यह जरूरी होता है कि वह जवाब देने वालों के साथ अपने भरोसेपूर्ण संबंध को स्थापित करे और उनके बारे में ठीक से जाने। सबसे सफल घनिष्ठता स्थापन वह होता है जिसमें अनुसंधानकर्ता कोई सवाल पूछे बगैर अथवा बातचीत किये बगैर दूसरों को भलीभांति जान जाए। वास्तविकता यह है की ऐसा कोई क्लास अथवा लेक्चर नहीं है जिसके माध्यम से फील्डवर्कर को फील्ड में जिन स्थितियों का सामना करना पड़ता है उसके बारे में उसे पूरी तरह से तैयार किया जा सके। प्रत्येक फील्ड अपने आप में अद्वितीय होता है और फील्ड में प्रत्येक दिन नई किस्म की चुनौतियों और जवाबों का सामना करना पड़ता है, यह फील्ड (क्षेत्र) अप्रत्याशित रूप से प्रत्याशित है। (चन्ना, 2015)

13.3.2 तथ्य संग्रहण

स्थानीय लोगों अथवा समुदायों से घनिष्ठता स्थापित कर लेने के पश्चात हम उनके अध्ययन के लिए जाते हैं। जब अगला कार्य तथ्य संग्रहण करना है। फील्ड में प्राथमिक डेटा संग्रहित किया जाता है जिसमें सूचना देने वालों से प्रत्यक्ष तौर पर बातचीत की जाती है। डेटा संग्रहण हेतु फील्ड में मानवैविज्ञानियों द्वारा जिस उपकरण का इस्तेमाल किया जाता है वह मुख्यतः प्रेक्षण(अवलोकन) और तदुपरान्त साक्षात्कार होता है।

प्रेक्षण (अवलोकन) : प्रेक्षण दो प्रकार के होते हैं। (क) प्रतिभागी प्रेक्षण और (ख) गैर–प्रतिभागी प्रेक्षण। जैसा कि हमने पिछली ईकाई में यह जाना है कि प्रतिभागी प्रेक्षण की शुरुआत मालिनोवस्की से शुरू हुई जिन्होने अध्ययन के दौरान सामुदायिक गतिविधियों में भाग लिया और उनके बीच रहने का प्रयास किया। इसके विपरीत गैर–प्रतिभागी प्रेक्षण में अनुसंधानकर्ता समुदाय से दूर रहकर समुदाय की गतिविधियों का अवलोकन करता है और वह प्रत्यक्ष रूप से समुदाय से घुलता–मिलता नहीं है। ज्यादातर मामलों में फील्ड में अनुसंधानकर्ताओं द्वारा प्रेक्षण को अर्द्ध–प्रतिभागी प्रेक्षण के रूप में जाना जाता है क्योंकि कई बार शोधकर्ता के लिए यह संभव नहीं होता कि वह फील्ड की स्थितियों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े। उदाहरणस्वरूप, आप किसी शादी समारोह में शामिल होकर शादी से जुड़े रीति–रिवाजों का अध्ययन कर सकते हैं। अनुसंधानकर्ता के रूप में आप यह देख सकते हैं कि शादी के दौरान पंडित द्वारा मंत्रों का उच्चारण किया जाता है और दूसरे रीति–रिवाजों को निभाया जाता है तथा दूल्हा–दुल्हन की सहभागिता अलग–अलग रीति–रिवाजों में होती है। यहाँ हालांकि, अनुसंधानकर्ता प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षण करता है तथापि यह उसकी पूर्ण प्रतिभागिता नहीं है क्योंकि मंत्रो का उच्चारण उसके द्वारा न होकर पंडित द्वारा किया जाता है और दूल्हा–दुल्हन द्वारा विभिन्न रीति–रिवाजों को निभाया जाता है और वे शादी संबंधी प्रतिज्ञा को ग्रहण करते हैं।

साक्षात्कार : साक्षात्कार करने के कई तरीके हैं और साक्षात्कार कई प्रकार के हो सकते हैं। (क) प्रत्यक्ष साक्षात्कार तथा (ख) अप्रत्यक्ष साक्षात्कार, साक्षात्कार की दो मूलभूत तकनीके हैं। प्रत्यक्ष साक्षात्कार में अनुसंधानकर्ता सूचना देने वालों से प्रत्यक्ष रूप से मिलता है और आमने–सामने बैठकर साक्षात्कार लेता है। जबकि अप्रत्यक्ष साक्षात्कार में अनुसंधानकर्ता अपने प्रश्नों को सूचना देने वालों तक ई–मेलध्डाक द्वारा भेज सकता है अथवा विडियो कॉन्फ्रेंसिंग अथवा वेब या दूरभाष के माध्यम से साक्षात्कार ले सकता है। फील्डवर्क के दौरान चूंकि, अनुसंधानकर्ता फील्ड में ही मौजूद रहता है इसलिए वहाँ पर प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेना ही आदर्श स्वरूप होता है। जीवन इतिहास, केस अध्ययन और फोकस समूह चर्चा साक्षात्कार के दूसरे तरीके हैं जिनका प्रयोग अनुसंधानकर्ता समस्या की पहचान करने के आधार पर करता है। इन पहलुओं की विस्तृत चर्चा अगली इकाई में की जाएगी।

साक्षात्कार लेने की तकनीक : साक्षात्कार लेने के लिए हमें व्यवस्थित दृष्टिकोण को अपनाना होता है इसके लिए प्रश्न पहले से तैयार कर लिए जाते है ताकि अनुसंधानकर्ता, साक्षात्कार लेने के दौरान सूचनादाता से तर्क–संगत सूचनाओं को प्राप्त कर सके। अनुसंधानकार्य की जरूरत के अनुसार विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार–अनुसूची और नियम बना लिए जाते हैं।

प्रत्यक्ष साक्षात्कार के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा या तो संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची अथवा गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची तैयार कर ली जाती है। संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची में निश्चित प्रश्नों के प्रारूप होते हैं जिनका प्रयोग अनुसंधानकर्ता साक्षात्कार के दौरान करता है। गैर–संरचनात्मक साक्षात्कार नियम का इस्तेमाल साक्षात्कार लेने के लिए उन स्थितियों में किया जाता है जहां निश्चित प्रारूपों का इस्तेमाल नहीं होता है तथा साक्षात्कार स्वतंत्र रूप से लिए जाते हैं। वर्चुअल स्पेस में साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्नावली का इस्तेमाल किया जाता है। प्रश्नावली में वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के निश्चित प्रारूप होते हैं जिनका जवाब प्रतिवादी को देना होता है और वह भी 'हाँ' अथवा 'नहीं' के माध्यम से। प्रश्नावली में वर्णात्मक किस्म के प्रश्न नहीं होते हैं, हालांकि वर्तमान समय में यह प्रवृति बदल रही है और कई लोग वर्णात्मक प्रश्नों को भी शामिल कर रहे हैं।

13.3.3 फील्ड डायरी बनाना

फील्ड डायरी, अनुसंधानकर्ता के लिए मित्र समान होती है, यह वह डायरी होती है जिसमें कोई अनुसंधानकर्ता अपने मन की बातों को लिख सकता है और यही नहीं वह फील्ड में किए जाने वाले दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों और उनके बारे में अपनी समझ का वर्णन इसमें कर सकता है। फील्डवर्क के दौरान यह जरूरी होता है कि अनुसंधानकर्ता द्वारा फील्ड डायरी बनाई जाए। इसके पीछे मूल कारण यह है कि हम फील्ड में लगभग एक सप्ताह से लेकर कुछ महीनों तक का समय बिताते हैं और हम यदि दिन–प्रतिदिन की गतिविधि के बारे में दैनिक रूप से लिखकर न रखें तो कुछ समय बाद हम प्रत्येक दिन की बातों को भूल जाएंगे। जब हम फील्ड से लौटते हैं और डेटा संकलन प्रारंभ करते हैं तब फील्ड डायरी हमारे लिए सहायक सिद्ध होती है। जैसे ही हम डायरी के पेजों को देखते हैं तब वे हमें बहुत सारी घटनाओं और गतिविधियों का स्मरण होता हैं, अन्यथा जीवन के दिन–प्रतिदिन की भागदौड़ में हम उन सब को भूल सकते हैं। फील्ड नोट ,हमें बाद में स्मृतियों के माध्यम से फील्ड से जुड़ी बातों को याद दिलाते हैं जो कि फील्ड रिपोर्ट अथवा परियोजना अथवा शोधकार्य लेखन में अत्यधिक सहायता करते हैं।

अतः अगला सवाल यह उठता है कि फील्ड डायरी किस प्रकार बनाई जाए? क्या हम रोज–रोज की घटनाओं अथवा गतिविधियों को लिखें? खैर, हरदम यह सलाह दी जाती है कि दिन बीतने के बाद शाम को पूरे दिन की गतिविधियों के बारे में डायरी में लिखा जाए। यह कार्य अनुसंधानकर्ता उस समय करे जब वह एकांत में हो और वह पूरे दिन की गतिविधियों को याद कर सके। साक्षात्कार के समय यदि हम डायरी में लिखते रहेंगे तो इससे सूचना देने वाले का ध्यान बंट सकता है और वार्तालाप का प्रवाह बाधित हो सकता है। यही नहीं यदि हम साक्षात्कार के पूरे समय अपनी डायरी में ही लिखते रहेंगे तो वार्तालाप के दौरान सूचना देने वाले के चेहरे के हाव–भाव को हम नहीं देख पाएंगे। साक्षात्कार के दौरान अवलोकन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि, वार्तालाप के दौरान चेहरे के हाव–भाव व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करते हैं। हालांकि, हमें साक्षात्कार के दौरान उन बातों को अवश्य ही लिख लेना चाहिए जिन्हें हम सूचनादाता के शब्दों में हू–ब–हू लिखना चाहते हों। इसलिए यह सलाह दी जाती है कि फील्ड वर्क के दौरान फील्ड डायरी अवश्य बनाई जाए क्योंकि फील्ड डायरी अनुसंधानकर्ता द्वारा फील्ड में बिताए गए समय को प्रतिबिम्बित करती है।

13.3.4 फील्ड गजेट्स

फील्ड में अनुसंधानकर्ता न केवल फील्ड डायरी को ही ले जाता है अपितु, वह कुछ उपकरण भी ले जाता है ताकि वह डेटा को संग्रहीत कर सके, जैसे कि कैमरे द्वारा स्टिल फोटोग्राफी लेना अथवा साक्षात्कार हेतु विडियो रिकॉर्डर या आडिओ रिकॉर्डर का इस्तेमाल करना। एक अनुसंधानकर्ता के लिए यह जरूरी होता है कि वह इन उपकरणों का इस्तेमाल सावधानीपूर्वक करे और इस का पहला चरण यह है कि सबसे पहले वह सूचना देने वाले की सहमति ले ले कि उसकी बातों को फिल्मांकित किया जा रहा है अथवा उसकी बातों को साक्षात्कार के दौरान रिकॉर्ड किया जा रहा है। इन उपकरणों का इस्तेमाल पूरी तरह से सूचना देने वाले की सहमति पर निर्भर करता है, यदि साक्षात्कार लेने के दौरान कभी भी साक्षात्कारदाता यह कहे कि उसकी बातों को फिल्मांकित न किया जाए अथवा उसकी बातों को रिकॉर्ड न किया जाए तब अनुसंधानकर्ता को उसी समय उसकी बात मान लेनी चाहिए। स्टिल फोटोग्राफी का इस्तेमाल सदैव होता आया है। तथापि ,दृश्य(विजुअल) मानवविज्ञान ने आज अनुसंधानकर्ताओं हेतु नए रास्ते खोल दिये है जिसमें वह लोगों के जीवन का दस्तावेजीकरण कर सके।

अपनी प्रगति की जांच करें

5. मानवविज्ञान का सार तत्व क्या है?

.....

.....

.....

6. घनिष्ठता स्थापन से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

7. क्या फील्ड वर्क के दौरान हमें कोई फील्ड डायरी बनानी चाहिए?

.....

.....

.....

8. ' मानवविज्ञानी डाटा संग्रहण हेतु स्टिल फोटोग्राफी, आडिओ–विडियो टेप रिकॉर्डर का इस्तेमाल करते हैं।' यह कथन सही है या गलत, इसकी व्याख्या करें।

.....

.....

.....

13.4 फील्डवर्क के उपरांत क्या कार्य किए जाए

अब तक हम फील्डवर्क और डेटा संग्रहण के बारे में चर्चा कर रहे थे। इस अनुभाग में हम इस बात की चर्चा करेंगे कि जिन सूचनाओं और आंकड़ों को हमने एकत्रित किया है उसे क्या करना है। इस भाग में इस बात की चर्चा की जाएगी की डेटा को किस प्रकार संकलित करना है और उनका किस प्रकार विश्लेषण करना है तथा डेटा विश्लेषण के उपरांत रिपोर्ट किस प्रकार से तैयार करनी है।

13.4.1 तथ्य संकलन और विश्लेषण

फील्ड में हम बहुत प्रकार के तथ्यों को एकत्रित करते हैं जिसमें पहली समस्या यह आती है कि उन्हें किस प्रकार शोध के अनुरूप छांटा जाए। अनुसंधान प्रकल्प पर भरोसा करते हुए हमें सबसे पहले गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा को अलग–अलग करना होगा। गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा को इसलिए अलग–अलग देखना होगा क्योंकि उनके विश्लेषण की प्रक्रिया भी भिन्न भिन्न होती है। आइए सबसे पहले जल्दी से हम इस बात को जाने और समझे कि गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा का क्या तात्पर्य होता है। मात्रात्मक डेटा वह होती है जिसमें संख्याएं होती हैं जैसे कि लोगों के घरों की संख्या, गांव में रहने वाले लोगों की संख्या, विद्यालय जाने वाले बच्चों की संख्या इत्यादि। गुणात्मक डाटा गुणों को रेखांकित करती है जिन्हें मात्रिक रूप से नहीं गिना जा सकता। इसमें विस्तृत तथ्य या वर्णनात्मक तथ्य भी शामिल होते है। उदाहरण के लिए, यदि कोई अनुसंधानकर्ता भोपाल गैस कांड के प्रभावी लोगों लोगों की बातों से भावुक हो जाता है जो कि, 1980 के दशक में घटी थी। इस प्रकार सूचनादाताओं के भावात्मक अनुभव जो उनके द्वारा दिए जाते है उसे मात्रात्मक रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इसका वर्णन लिखित रूप में सूचना देने वालों के माध्यम से किया जा सकता है जो इस घटना से भावात्मक रूप से जुड़े होते हैं, इसमें अनुसंधानकर्ता के अवलोकन, अर्थ और परीक्षण को भी शामिल किया जाता है जो उस स्थान या उन लोगों के बारे में देखता और समझता है। अनुसंधानकर्ता द्वारा देखा गया कार्य निष्पादन किस प्रकार से होता या उन लोगों के जीवन के तरीकों का वर्णन शामिल हो सकता है कि वे किस प्रकार किसी स्थिति का सामना करते हैं, वे किस प्रकार का विचार अपने मन में रखते हैं, इत्यादि।

विभिन्न प्रकार के विश्लेषणात्मक उपकरणों का प्रयोग करके मात्रात्मक आंकड़ों को क्रमबद्ध और विश्लेषित करने की आवश्यकता होती है। पहले इसे मैनुअल रूप से किया जाता था

जिसमें सांख्यिकीय के सूत्रों का इस्तेमाल किया जाता था और रेखा चित्र बनाए जाते थे। हालांकि, आज के कंप्यूटर युग में हमारे पास स्टैटिकल पैकेज जैसे एस.पी.एस.एस (SPSS) सॉफ्टवेयर सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र हेतु मौजूद हैं जिससे मैनुअल कामों में कमी आई है और समय की भी बचत होने लगी है। केस स्टडी अथवा जीवन इतिहास जैसे गुणात्मक डेटा के लिए सूचनादाताओं से बातचीत यानी वार्तालाप तथा साक्षात्कार के आधार पर इन्हें लिखा जाता है। गुणात्मक डेटा हेतु हम ज्यादातर समय रिकॉर्ड किए गए वार्तालाप और अवलोकन पर भरोसा करते हैं जिन्हें हम जहां तक संभव होता है सही ढंग से लिखते हैं। किसी भी गुणात्मक डेटा का विश्लेषण और व्याख्या अत्यधिक आवश्यक और सहज है। आमतौर पर अनेक मानवविज्ञानी इन्हें विभिन्न प्रकार से वर्णन करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, किसी भी व्यक्ति पर पूर्वाग्रह से बचने के लिए अनुसंधानकर्ता को यह स्पष्ट रूप से बताना चाहिए कि वह उसकी व्याख्या वह उसी प्रकार क्यों कर रहा है।

13.4.2 रिपोर्ट लेखन

एक बार डेटा के संकलन के उपरांत उसकी छंटाई महत्वपूर्ण होती है, जिसे विश्लेषण के उपरांत अनुक्रमिक रूप प्रदान करना जरूरी होता है, जो राइट–अप कहलाता है। आपने 'राइटर्स ब्लॉक' की अवधारणा को जरूर सुना होगा, यह एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें एक लेखक यह नहीं समझ पाता कि वह कहां से लिखना शुरू करें और क्या लिखे। लेखन के समय ऐसी समस्या आना आम बात है। अब जब हमने आंकड़ों को एकत्रित कर उनका विश्लेषण भी कर लिया है परंतु हम इस बात के लिए पूरी तरह से आश्वस्त नहीं है कि उन्हें किस प्रकार से प्रस्तुत किया जाए। ऐसी स्थिति में दो प्रकार के लेखन शैली का जिक्र किया जा रहा है जिससे नए लेखकों को सहायता मिलेगी।

मूल रूप से लेखन कार्य दो प्रकार से किया जा सकता है। एक तरीका तो यह है कि हम मुक्त रूप से यानी स्वतंत्र रूप से लिखना चालू करें कि क्षेत्र से एकत्रित तथ्यों को एक अनुक्रम में रखते जाएं जिसे लेख नाम से जाना जाता हैं। इसे शुरू करने के लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि हमने फील्ड में जो कुछ देखा समझा है और जिन घटनाओं से हमारा पाला पड़ा है, उनके बारे में जो हम सोचते हैं या जिसका वर्णन हमने अपनी फील्ड डायरी में किया है उसे उसी रूप में प्रस्तुत कर दें। इसमें कई अनुसंधानकर्ता अपने फील्ड के प्रथम दिन के अनुभव से लेखनकार्य शुरू करते हैं और इसी अनुक्रम को अंत तक बनाए रखते हुए रिपोर्ट को प्रवाह पूर्वक तैयार करते है। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि सबसे पहले हम एक रूपरेखा तैयार करें और उसी पैटर्न में लिखना शुरू करें जिससे लेख लेखन के रूप में जाना जाता है। लेख लेखन के लिए कोई किसी भी विधि का प्रयोग करें परंतु उससे एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि लेख में सबसे पहले प्रस्तावना, परिचय होना चाहिए उसके बाद प्रयोजन और उद्देश्य के उपरांत फील्ड वर्क तथा तकनीक व प्रविधि यानी पद्धति का होना जरूरी है, तदुपरांत डेटा विश्लेषण होना और अंत में सारांश होना चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें

9. गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा से आपका क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

10. मानव विज्ञानी फिर से एकत्रित किए गए डेटा के आधार पर उन्हें संकलित करते हैं और उनका विश्लेषण करते हैं तथा रिपोर्ट अथवा थीसिस को तैयार करते हैं। क्या यह कथन सही है या गलत, इसकी चर्चा करें।

.....

.....

.....

13.5 सारांश

आइए अब जल्दी से इस बात को जाने कि हमने इस इकाई में किन बातों को पढ़ा अथवा हम इस इकाई में किन बातों का अध्ययन कर रहे हैं। यह इकाई जो फील्डवर्क से संबंधित है वह हमें यह बताती है कि कोई अनुसंधानकर्ता किस प्रकार फील्ड में जाए। इस इकाई में इस बात का विस्तृत वर्णन किया गया है कि फील्ड में जाने के लिए कौन–कौन सी तैयारियां की जानी चाहिए और उसके विभिन्न चरण कौन–कौन से होते हैं, अनुसंधान डिजाइन किस प्रकार से निर्मित किए जाते हैं, शोध समस्या की पहचान किस प्रकार से की जाती है तथा शोध समस्या तक किस प्रकार पहुंचा जाता है। इस इकाई में साहित्य समीक्षा की प्रासंगिकता का भी उल्लेख किया गया है। इस इकाई में हमने आपको यह बताने की कोशिश की है कि एक अनुसंधानकर्ता के रूप में आप किस प्रकार अपनी योजनाओं को तैयार कर सकते हैं और अपने अनुसंधानकार्य को किस प्रकार पूरा कर सकते हैं। अपनी अगली इकाई में हम इस बात की विस्तृत चर्चा करेंगे की फील्डवर्क के दौरान सामाजिक अथवा सांस्कृतिक मानवविज्ञानियों द्वारा किन तकनीकों और उपकरणों का प्रयोग करके डेटा यानी आंकड़ों को एकत्रित किया जाता है।

13.6. सन्दर्भ

बर्नार्ड, एच. आर. (2006). *रिसर्च मेथड्स इन एन्थ्रोपोलॉजी: क्वालिटेटिव एंड क्वांटिटेटिव एप्रोचेस.* लंहमः अल्टामीरा प्रेस.

चन्ना, एस. एम, (2015). गेटिंग द राइटरश्स क्रंप्स! मेकिंग द ट्रांजिशन फ्रॉम मॉडर्निस्ज्म टू पोस्ट– मॉडर्निस्ज्म इन राइटिंग एन्थ्रोपोलॉजी. वी. के. श्रीवास्तव (सम्पादित). *एक्सपीरियेन्सेस ऑफ फील्डवर्क एंड राइटिंग* (221–237) नई दिल्लीः सीरियल्स पब्लिकेशन.

गुप्ता, ए. एवं फर्गुसन, जे. (संपा). (1997). *एंथ्रोपोलोजिकल लोकेशन्स: बाउंड्रीज एंड ग्राउंड्स ऑफ ए फील्ड साइन्स.* बर्क्लेः यूनिवर्सिटी ऑफ कॅलिफॉर्निया प्रेस.

जॉनसन, जे. एम. (1975). *डूयिंग फील्ड रिसर्च.* न्यूयार्कः फ्री प्रेस.

मालिनोव्स्की, बी. (1922). *अर्गोनोट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिकः एन अकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एड्वेंचर इन द आर्किपेलागोज ऑफ मेलनेसियन न्यू गुयाना.* लंदन: रूटलेज एवं केगेन पॉल.

स्टेनबेक, एस. एवं स्टेनबेक, डब्ल्यू. (1988). *अंडरस्टैंडिंग एंड कंडक्टिंग क्वालिटेटिव रिसर्च.* रेस्टन, वी.ए.: काउन्सिल फॉर एक्सेप्शनल चिल्ड्रेन.

वेक्स, आर. (1971). *डूयिंग फील्डवर्क : वॉर्निंग्स एंड एड्वाइज.* शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस.

http://www.merriam-webster.com/dictionary/rapport accessed in 2017.

13.7 आपकी प्रगति जांचने हेतु उत्तर

1. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.0 को देखें
2. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.1 को देखें
3. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.1 को देखें
4. गलत
5. फील्डवर्क
6. कृपया अधिक जानकारी के लिए अनुभाग 13.3.1 को देखें
7. हाँ
8. सही
9. अनुभाग 13.4.1 को देखें
10. सही

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY